आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ :→ आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल की व्याप्ति सन् 1000 ई० से अब तक मानी जाती है। सन 1000 ई० के पश्चात अपभ्रंश भाषा के विविध रूपों से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास प्रारम्भ हुआ। भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार निम्नलिखित अपभ्रंश भाषाओं से उनके सामने अंकित आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ :—

1 शौरसेनी — पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती
2 महाराष्ट्री अपभ्रंश — मराठी
3 मागधी अपभ्रंश — बंगला, असमिया, उड़िया, बिहारी।
4 अर्द्धमागधी अपभ्रंश → पूर्वी हिन्दी
5 पैशाची अपभ्रंश → पंजाबी, लहँदा
6 ब्राचड़ अपभ्रंश → सिन्धी
7 खस अपभ्रंश → पहाड़ी

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:-

I पश्चिमी हिन्दी — पश्चिमी हिन्दी का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। इसकी पाँच प्रमुख उपभाषाएँ हैं — खड़ी बोली, ब्रजभाषा, हरियाणवी, कन्नौजी और बुन्देली।

1 खड़ी बोली → खड़ी बोली पश्चिमी हिन्दी की सबसे प्रमुख उपभाषा है। यह उत्तर प्रदेश के मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, देहरादून, बिजनौर, रामपुर, मुरादाबाद, बरेली आदि पश्चिमी जिलों की भाषा है। खड़ी बोली का मानक रूप ही आज 'राजभाषा' के रूप में स्वीकृत है। खड़ी बोली में प्रचुर साहित्य की सृष्टि हुई है। खड़ी बोली के दो साहित्यिक रूप मिलते हैं — हिन्दी और उर्दू। हिन्दी में संस्कृत के तत्सम शब्दों की बहुलता है तो उर्दू में अरबी-फारसी शब्दों का बाहुल्य है। खड़ी बोली राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की प्रमुख भाषा रही, अतः इसका प्रचार-प्रसार व्यापक स्तर पर हुआ। इसकी लिपि देवनागरी है।

2 ब्रजभाषा — ब्रजभाषा का क्षेत्र समूचा ब्रजमण्डल है जिसके प्रमुख केन्द्र हैं- मथुरा, आगरा, अलीगढ़, धौलपुर आदि। ब्रजभाषा अपने लालित्य, भाव्युर्य एवं संगीत के कारण विश्व की मधुरतम भाषाओं में परिगणित होती है। कृष्ण की जन्मभूमि से सम्बन्धित होने के कारण यह कृष्ण भक्ति काव्य की भाषा रही है। इसमें रचित कृष्ण काव्य में ब्रज संस्कृति जीवन्त रूप में साकार हो उठी है,

1857 की क्रांति मेरठ से शुरू हुई थी।

Scanned with CamScanner

3 हरियाणवी — हरियाणवी हरियाणा राज्य में बहुसंख्यक जनता की बोली है। हरियाणा राज्य का निर्माण और सीमा-निर्धारण इसी बोली के आधार पर हुआ है। हरियाणवी लोकसाहित्य की दृष्टि से अत्यन्त सम्पन्न है। इसकी लिपि देवनागरी है। हरियाणवी भाषा की अनेक उपबोलियाँ हैं —

1 बाँगरू — रोहतक इसका प्रमुख केन्द्र है।
2 ब्रजभाषा - पलवल और नीहि के आस-पास के क्षेत्र की भाषा है
3 अहीरवाटी - रेवाड़ी, महेन्द्रगढ, नारनौल, कोसली आदि की बोल
4 कौरवी — यमुनानदी के निकटवर्ती क्षेत्र सोनीपत, पानीपत, करनाल
5 बागड़ी → भिवानी, हिसार, सिरसा में बागड़ी बोलचाल की भाषा है
6 अम्बालती → अम्बाला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र के निकटवर्ती क्षेत्र

4 कन्नौजी → कन्नौजी का प्रमुख केन्द्र उत्तर प्रदेश में कन्नौज है, वैसे यह हरदोई, शाहजहाँपुर, पीलीभीत, इटावा तथा कानपुर में बोली जाती है। इसमें कुछ लोक साहित्य भी मिलता है। यह ब्रजभाषा से प्रभावित है। ब्रजभाषा का 'गयो' कन्नौजी में 'गओ' हो जाता है।

5 बुन्देली — बुन्देली या बुन्देलखण्डी "बुन्देलखण्ड" की प्रमुख बोली है। यह उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है। उत्तर प्रदेश में इसका क्षेत्र झाँसी, जालौन, हमीरपुर जिलों तथा मध्यप्रदेश में ग्वालियर, भोपाल, ओरछा, होशंगाबाद सागर आदि तक व्याप्त है। इसमें लोक-साहित्य की समृद्ध परम्परा मिलती है।

II पूर्वी हिन्दी — पूर्वी हिन्दी का विकास अर्द्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है। पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत तीन प्रमुख उपभाषाएं समाहित हैं। अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी।

अवधी - पूर्वी हिन्दी की अत्यन्त महत्वपूर्ण भाषा है। यह अवध क्षेत्र में बोली जाती है। लखनऊ, फैजाबाद, सीतापुर, रायबरेली, गोंडा, बहराइच आदि जनपदों तथा कानपुर, इलाहाबाद, मिर्जापुर के कुछ भागों में अवधी भाषा बोली जाती है। तुलसी की अमरकृति 'रामचरितमानस' तथा जायसी के प्रसिद्ध प्रेमाख्यानक 'पद्मावत' की रचना अवधी भाषा में हुई। आजकल इसमें साहित्यिक कृतियों की रचना तो नहीं हो रही, किन्तु लोक साहित्य की रचना व्यापक स्तर पर हो रही है। बघेली पूर्वी हिन्दी की

दूसरी उल्लेखनीय भाषा है। बघेली का क्षेत्र अवधी के दक्षिण में पड़ता है। इसका प्रमुख केन्द्र रीवाँ है, किन्तु इसका प्रसार जबलपुर, दमोह, माण्डला तथा बालाघाट जिलों तक है। कतिपय विद्वान बघेली को अवधी का ही एक रूप मानते हैं। इसमें कुछ लोकगीत मिलता है। छत्तीसगढ़ी छत्तीसगढ़ के रायपुर, बिलासपुर, नांदगांव रामगढ़, सरगुजा, कोरिया आदि स्थानों में बोली जाती है। बिहारी — बिहारी का उद्भव मागधी, अपभ्रंश से हुआ है। वास्तव में बिहारी अपने आप में कोई भाषा नहीं है, वरन् बिहार राज्य में बोली जाने वाली विविध बोलियों और भाषाओं के समूह को ही 'बिहारी' नाम से अभिहित किया जाता है। बिहार की प्रमुखतम भाषा है भोजपुरी। भोजपुरी बिहार और उत्तर प्रदेश के अनेक जनपदों में बोली जाती है। यह बिहार के पश्चिमी तथा उत्तरप्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में बोली जाने वाली अत्यन्त मधुर तथा संगीतात्मक भाषा है। भोजपुरी में लोकसाहित्य तो प्रचुर है तथा स्तर की दृष्टि से उत्तम है, किन्तु साहित्यिक रचनाएं कम ही मिलती हैं। बिहारी के अन्तर्गत दूसरी महत्वपूर्ण भाषा है मैथिली। बिहारी भाषाओं में मैथिली में सर्वाधिक स्तरीय साहित्य रचा गया है। यह मिथिला क्षेत्र में बोली जाने वाली अत्यन्त मधुर भाषा है। विद्यापति ने अपनी 'पदावली' की रचना 'मैथिली' में ही की है। मगध्य क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा 'मगही' है। यह गया, पटना, हजारीबाग, भागलपुर के पूर्वी भागों में बोली जाती है।

राजस्थानी — राजस्थान की भाषा को 'राजस्थानी' कहा जाता है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से माना जाता है। अपभ्रंश की सर्वाधिक विशेषताएं राजस्थानी में मिलती हैं, अतः इसे अपभ्रंश की सीधी बेटी' माना जाता है। प्राचीन काल में इसे मारू भाषा या डिंगल कहा जाता था। राजस्थानी के अन्तर्गत लगभग तीस बोलियां प्रचलित हैं, लेकिन चार बोलियां — मारवाड़ी, मालवी, जयपुरी और मेवाती प्रमुख हैं। मारवाड़ी का प्रयोग पश्चिमी राजस्थान (जोधपुर, उदयपुर, जैसलमेर, बीकानेर) में होता है। पुरानी मारवाड़ी ही डिंगल है। इसमें चन्दबरदायी, पृथ्वीराज, सूर्यमल्ल आदि अनेक कवियों ने उत्कृष्ट साहित्य की रचना की है। मालवी मालवा प्रदेश की बोली है। शुद्ध मालवी उज्जैन, इन्दौर और देवास में बोली जाती है। जयपुरी जयपुर, कोटा, बूंदी आदि क्षेत्रों में बोली जाती है। इसमें दादूपंथियों द्वारा रचित साहित्य मिलता है।

Scanned with CamScanner

मेवाती राजस्थानी की एक अन्य उल्लेखनीय बोली है। मेवाती का क्षेत्र उत्तरी राजस्थान के अलवर तथा हरियाणा के गुड़गाँव जिले का निकटवर्ती भाग है। इस पर ब्रजभाषा का प्रभाव लक्षित होता है। इस प्रकार राजस्थान के उत्तर में मेवाती, पश्चिम में मारवाड़ी, दक्षिण में मालवी तथा पूर्वी में जयपुरी का क्षेत्र है।

गुजराती - गुजराती गुजरात राज्य की भाषा है। सुरती, भीली, चारोतरी, काठियावाड़ी आदि गुजराती की प्रमुख बोलियाँ हैं। गुजरात प्रदेश में अरब, पारसी, तुर्क आदि विदेशी लोग बड़ी संख्या में बसते रहे हैं। अतः गुजराती में विदेशी शब्दावली का प्रचुर प्रभाव है। गुजराती की स्वतन्त्र लिपि है, जो देवनागरी से विकसित हुई है। गुजराती में पर्याप्त उच्चस्तरीय साहित्य मिलता है।

VI मराठी - मराठी का उद्भव महाराष्ट्री अपभ्रंश से हुआ है। मराठी महाराष्ट्र राज्य की भाषा है। मराठी की प्रमुख बोलियाँ हैं - देशी, नागपुरी, बरारी और कोंकणी। देशी दक्षिण भाग में बोली जाती है। नागपुरी नागपुर और समीपवर्ती क्षेत्र की बोली है। बरार की बोली को बरारी कहा जाता है। बरारी में भीली और तेलुगु भाषा के शब्द अधिक हैं। कोंकणी समुद्र तट के आस-पास की बोली है। इसमें कन्नड़ की शब्दावली की बहुलता है। मराठी की लिपि देवनागरी है। मराठी में उत्कृष्ट कोटि का सन्त साहित्य उपलब्ध है। इसमें ज्ञानेश्वर, तुकाराम आदि की वाणियाँ विशेष महत्त्वपूर्ण हैं।

VII बँगला - बँगला मागधी अपभ्रंश से उद्भूत है। यह बंगाल प्रदेश की भाषा है। बँगला में संस्कृत शब्दावली की बहुलता है। बंगला के मौखिक और लिखित रूपों में ही नहीं, नगर और ग्रामीण रूपों में भी अन्तर पाया जाता है। बँगला भाषा साहित्य रचना की दृष्टि से अत्यन्त सम्पन्न है। चण्डीदास, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, बंकिमचन्द्र, शरच्चन्द्र आदि अनेक उच्च कोटि के साहित्यकारों ने बँगला के साहित्य की श्रीवृद्धि की है।

VIII असमिया → असमिया आसाम प्रदेश की भाषा है। यह बंगला से बहुत मिलती-जुलती है। इसकी लिपि भी बंगला के समान है। आसमी पर तिब्बती, बर्मी, नागा आदि भाषाओं का प्रभाव लक्षित होता है। असमिया मागधी अपभ्रंश से उद्भूत है।

Scanned with CamScanner

उड़िया — उड़ीसा की भाषा उड़िया है। इसका विकास मागधी अपभ्रंश से हुआ है। असमिया के समान उड़िया भाषा पर भी बंगला का पर्याप्त प्रभाव है। उड़ीसा का प्राचीन नाम उत्कल है। अतः इसे उत्कली भी कहा जाता है। पुराने शिलालेख ही उड़िया के प्राचीन रूप के परिचायक हैं। उड़िया भाषा की सीमाएँ द्रविड़, तेलुगु और मराठी भाषा की सीमा से जुड़ी हुई हैं। परिणामस्वरूप इनमें तेलुगु एवं मराठी के पर्याप्त शब्द विद्यमान हैं।

पंजाबी — पंजाबी पंजाब राज्य की प्रमुख भाषा है। इसका उद्भव पैशाची अपभ्रंश से हुआ। पंजाबी अपनी रूप रचना में अपभ्रंश की अनेक विशेषताएँ सुरक्षित रखे हुए है। दुद्ध (दूध), पुत्त (पुत्र), सुत्ता (सोया हुआ) आदि शब्द अपभ्रंश के बहुत निकट हैं। आदिग्रन्थ तथा गुरुओं की वाणी के रूप में उच्चस्तरीय सन्त साहित्य पंजाबी भाषा में प्रचुर परिमाण में मिलता है। पंजाबी में कविता, कहानी, उपन्यास आदि के रूप में स्तरीय साहित्य का सृजन हुआ। पंजाबी लोक साहित्य की दृष्टि से भी सम्पन्न है। इसकी लिपि गुरुमुखी है।

XI लहँदा — लहँदा का विकास पैशाची प्राकृत से हुआ है। पंजाब के पश्चिमी तथा पश्चिमोत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में लहँदा का प्रयोग होता है। अब यह क्षेत्र पाकिस्तान में चला गया। इसे जटकी, मुलतानी, पश्चिमी पंजाबी, हिन्दकी नामों से पुकारा जाता है। लहँदा का शाब्दिक अर्थ है 'पश्चिमी'। यह उर्दू के समान अरबी लिपि में भी लिखी जाती है और पंजाबी के समान गुरुमुखी लिपि में भी।

XII सिन्धी — सिन्धी पाकिस्तान में स्थित सिन्ध प्रदेश की भाषा है। इसका उद्भव ब्राचड़ अपभ्रंश से हुआ है। इसकी पाँच बोलियाँ सिरैकी, लाड़ी, थरेली, बिचौली और कच्छी है। इनमें बिचौली सर्वप्रमुख है। बिचौली अब साहित्यिक भाषा हो गयी है। मूलतः इसकी लिपि लण्डा है किन्तु अब यह गुरुमुखी और अरबी लिपि में भी लिखी जाती है।

XIII पहाड़ी — पहाड़ी का उद्भव खस अपभ्रंश से हुआ। पश्चिमी पहाड़ी में लगभग तीस बोलियाँ है। मध्य पहाड़ी के कुमायूँनी और गढ़वाली दो प्रमुख बोलियाँ है। यह कुमायूँ

Scanned with CamScanner

नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ जनपदों में बोली जाती है। गढ़वाली, गढ़वाल अथवा उत्तराखण्ड की बोली है। इसमें टिहरी, गढ़वाल, चमोली, उत्तरकाशी का दक्षिणी भाग सम्मिलित है। इसमें लोकगीतों के अनेक संग्रह प्रकाशित हुए हैं। पूर्वी पहाड़ी में नेपाली प्रमुख है जिसे गोरखाली और पर्वतिया भी कहते हैं। यह नेपाल की राजभाषा है।

आधुनिक भारतीय भाषाओं की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1 परसर्गों के रूप में विभक्तियों के पूर्णतः अलग हो जाने के कारण आधुनिक आर्य भाषाएँ पूर्णतः वियोगात्मक हो गईं।

2 कुछ जगह ध्वनि बदलने पर भी लिपि अपरिवर्तनशील बनी रही-

i ऋ और रि में उच्चारण की दृष्टि से कोई भेद नहीं है।

ii ष का शुद्ध उच्चारण नहीं होता। यह ध्वनि 'श' अथवा 'स' के रूप में उच्चरित होती है।

(iii) 'ज्ञ' संयुक्ताक्षर की निर्मिति ज्+ञ से हुई है। अतः इसका उच्चारण 'ज्ञ' ही होना चाहिए। किन्तु अब इसका उच्चारण ग्यँ, ज्यँ या ग्यँ होता है।

IV क़, ख़, ग़, ज़, फ़ जैसी अनेक विदेशी ध्वनियाँ स्वीकृत हो गई हैं, किन्तु इनका प्रयोग इने-गिने शिक्षित लोगों द्वारा ही होता है।

V वर्ग की अन्तिम ध्वनि के संयोजन के स्थान पर अब सर्वत्र अनुस्वार (ं) के प्रयोग का प्रचलन हो गया है। जैसे- रङ्क - रंक, पुञ्ज - पुंज, पन्त - पंत, दण्ड - दंड, कम्पन - कंपन।

आधुनिक भारतीय आ० भा० में ड तथा ढ ध्वनियों के साथ ही ड़ तथा ढ़ ध्वनियों का भी समावेश हो गया।

| अब अकारान्त शब्दों के अन्त का 'अ' लुप्त होता जा रहा है वे शब्द व्यंजनान्त होते जा रहे हैं। जैसे - राम - राम्, कमल-कमल्। उच्चारण की दृष्टि से शब्दों के मध्य का 'अ' भी लुप्त होता जा रहा है। लिखा तो जाता है किसको, कितना, इसका, किन्तु उच्चारण होता है किस्को, कित्ना, इस्का।

| संयुक्त व्यंजनों में एक व्यंजन का लोप हो गया है और इस क्षतिपूर्ति के लिए पूर्व ह्रस्व स्वर का दीर्घ हो गया है। जैसे दुग्ध - दूध, सप्त - सात, हस्त - हाथ, कर्म - काम।

7 आधुनिक आ० भा० की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें

विदेशी भाषाओं - अंग्रेजी अरबी, फारसी, तथा भारतीय द्रविड़ भाषाओं, तमिल, तेलुगु आदि के अनेक शब्द गृहित हुए। अपभ्रंश में इनका अभाव था।

(8) विदेशी शब्दावली की प्रचुरता के कारण स्वदेशी - विदेशी के संगम से संकर शब्दों का धड़ाधड़ निर्माण हो रहा है, यथा - रेलगाड़ी, प्रेम-दीवाना, बेकाम बेस्वाद आदि।

(9) आधुनिक आ० भा० में दो लिंग तथा दो वचन ही शेष रह गए हैं, जबकि संस्कृत में तीन लिंग, तीन वचन प्रचलित थे। केवल गुजराती, मराठी में अब भी तीन लिंग पाए जाते हैं।

(10) अब सभी आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में ज्ञान-विज्ञान के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक आदि पारिभाषिक शब्दावली की संख्या बढ़ती जा रही है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आधुनिक भारतीय भाषाएँ वियोगात्मक हैं तथा व्याकरणिक दृष्टि से सुलझाव और सरलीकरण की दिशा की ओर अग्रसर हैं। बोलियाँ अपने स्थान पर लोकव्यवहार का माध्यम हैं, किंतु शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयुक्त भाषाएं तत्समीकरण की ओर उन्मुख हैं। इसके साथ-साथ उनमें विभिन्न ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं के अनुरूप पारिभाषिक शब्दावली की वृद्धि होती जा रही है।

Scanned with CamScanner